

Chapter 8

लौहतुला

2marks

प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत -

- (क) वणिक्पुत्रस्य किं नाम आसीत्?
- (ख) तुला कैः भक्षिता आसीत्?
- (ग) तुला कीदृशी आसीत्?
- (घ) पुत्रः क्रेन हतः इति जीर्णधनः वदति?
- (ङ) विवदमानौ तौ द्वावपि कुत्र गतौ?

उत्तराणि :

- (क) जीर्णधनः।
- (ख) मूषकैः
- (ग) लौहघटिता।
- (घ) श्येन
- (ङ) राजकुलम्।

प्रश्न 2.

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -

(अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

- (क) देशान्तरं गन्तुमिच्छन् वणिक्पुत्रः किं व्यचिन्तयत्?
- (दूसरे देश में जाने की इच्छा करते हुए व्यापारी पुत्र ने क्या सोचा?)

उत्तरम् :

वणिक्पुत्रः व्यचिन्तयत्- 'यत्र पूर्वं भोगाः भुक्ताः तत्र विभवहीनः सन् न वसेत्।'

(व्यापारी पुत्र ने सोचा "जहाँ पहले ऐश्वर्य का उपभोग किया गया, वहीं पर निर्धन होने पर नहीं रहना चाहिए।")

- (ख) स्वतुलां याचमानं जीर्णधनं श्रेष्ठी किं अकथयत्?

(अपनी तराजू को माँगने वाले जीर्णधन से सेठ ने क्या कहा?)

उत्तरम् :

जीर्णधनं श्रेष्ठी अकथयत्"भोः! नास्ति तुला सा तु मूषकैः भक्षिता।"
(जीर्णधन से सेठ ने कहा- "अरे! तराजू नहीं है, उसे तो चूहों ने खा लिया।")

(ग) जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः।।
(जीर्णधन पर्वत की गुफा के द्वार को किससे ढककर घर आ गया?)
उत्तरम् :
जीर्णधनः गिरिगुहाद्वारं महत्या शिलया आच्छाद्य गृहमागतः।
(जीर्णधन पर्वत की गुफा के द्वार को बहुत बड़ी शिला से ढककर घर आ गया।)

(घ) स्नानानतरं पुत्रविषये पृष्टः वणिक्पुत्रः श्रेष्ठिनं किम् अवदत्?
(स्नान के बाद पुत्र के विषय में पूछे जाने पर व्यापारी-पुत्र ने सेठ से क्या कहा?)
उत्तरम् :
वणिक्पुत्रः अवदत्-"भोः! तव पुत्रः नदीतटात् श्येनेन हृतः"।
(व्यापारी, पुत्र ने कहा-"अरे! तुम्हारे पुत्र का नदी के किनारे से बाज द्वारा अपहरण कर लिया गया।")

(ङ) धर्माधिकारिणः जीर्णधनश्रेष्ठिनौ कथं तोषितवन्तः?
(धर्माधिकारियों ने जीर्णधन और सेठ को किस प्रकार सन्तुष्ट किया?)
उत्तरम् :
धर्माधिकारिणः तौ परस्परं तुला-शिशु-प्रदानेन तोषितवन्तः।
(धर्माधिकारियों ने उन दोनों को परस्पर में तराजू और बालक देकर सन्तुष्ट किया।)

प्रश्न 3.

स्थलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं करुत

(क) जीर्णधनः विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्।

उत्तरम् :

कः विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत्?

(ख) श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय अभ्यागतेन सह प्रस्थितः।

उत्तरम् :

श्रेष्ठिनः शिशुः स्नानोपकरणमादाय केन सह प्रस्थितः?

(ग) वणिक् गिरिगुहां बृहच्छिलया आच्छादितवान्।

उत्तरम् :

वणिक् गिरिगुहां कया आच्छादितवान्?

(घ) सभ्यैः तौ परस्परं संबोध्य तुला-शिशु-प्रदानेन सन्तोषितौ।

उत्तरम् :

सभ्यैः तौ परस्परं संबोध्य कथं सन्तोषितौ?

RBSESolutions.in

प्रश्न 4.

अधोलिखितानां श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः पाठमाधृत्य तम् पूरयत -

(क) यत्र देशे अथवा स्थाने भोगाः भुक्ता विभवहीनः यः स पुरुषाधमः।

(ख) राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य मूषकाः तत्र श्येनः हरेत्, अत्र संशयः न।

उत्तरम् :

(क) यत्र देशे अथवा स्थाने स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ता तस्मिन् विभवहीनः यः वसेत् स

पुरुषाधमः।

(ख) राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य तुलां मूषकाः खादन्ति तत्र श्येनः बालकं हरेत् अत्र संशयः न।

प्रश्न 5.

तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत यत्र -

(क) ल्यप् प्रत्ययः नास्ति

स्य, लौहसहस्रस्य, संबोध्य, आदाय।

उत्तरम् :

लौहसहस्रस्य।

(ख) यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति -

श्रेष्ठिनम्, स्नानोपकरणम्, सत्वरम्, कार्यकारणम्

उत्तरम् :

सत्वरम्।

(ग) यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति

पश्यतः, स्ववीर्यतः, श्रेष्ठिनः सभ्यानाम्

उत्तरम् :

स्ववीर्यतः।

प्रश्न 6.

सन्धिना सन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

- (क) श्रेष्ठ्याह = + आह
 (ख) = द्वौ + अपि
 (ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष +
 (घ) = यथा + इच्छया
 (ङ) स्नानोपकरणम् = + उपकरणम्
 (च) = स्नान + अर्थम्

उत्तरम् :

- (क) श्रेष्ठ्याह = श्रेष्ठी + आह
 (ख) द्वावपि = द्वौ + अपि
 (ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + उपार्जिता
 (घ) यथेच्छया = यथा + इच्छया
 (ङ) स्नानोपकरणम् = स्नान + उपकरणम्
 (च) स्नानार्थम् = स्नान + अर्थम्

प्रश्न 7.

समस्तपदं विग्रहं वा लिखत -

विग्रहः समस्तपदम्

- (क) स्नानस्य उपकरणम् =
 (ख) = गिरिगुहायाम्
 (ग) धर्मस्य अधिकारी =
 (घ) = विभवहीनाः

उत्तरम् :

विग्रहः समस्तपदम्

- (क) स्नानस्य उपकरणम् = स्नानोपकरणम्
 (ख) गिरेः गुहायाम्। = गिरिगुहायाम्
 (ग) धर्मस्य अधिकारी = धर्माधिकारी
 (घ) विभवेन हीनाः = विभवहीनाः

4marks

घूत्तरात्मक प्रश्न :

(क) संस्कृत में प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.

जीर्णधनः कस्मात् कारणात् देशान्तरं गन्तुमिच्छति?
(जीर्णधन किस कारण दूसरे देश में जाना चाहता था?)

उत्तर :

जीर्णधनः विभवक्षयाद्देशान्तरं गन्तुमिच्छति।
(जीर्णधन धन नष्ट हो जाने के कारण दूसरे देश में जाना चाहता था।)

प्रश्न 2.

जीर्णधनस्य गृहे कीदृशी तुला आसीत्?
(जीर्णधन के घर में कैसी)

उत्तर :

जीर्णधनस्य गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्।
(जीर्णधन के घर में लोहे से निर्मित पूर्वजों की तराजू थी।)

प्रश्न 3.

जीर्णधनेन स्वस्य लौहतुला कुत्र निक्षेपभूता कृता?
(जीर्णधन ने अपनी लोहे की तराजू कहाँ धरोहर के रूप में रखी थी?)

उत्तर :

जीर्णधनेन स्वस्य लौहतुला कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेप भूता कृता।
(जीर्णधन ने अपनी लोहे की तराजू किसी सेठ के घर धरोहर के रूप में रखी थी।)

प्रश्न 4.

लौहतुलाः कैः भक्षिता?
(लोहे की तराजू को कौन खा गये थे?)

उत्तर :

लौहतुला मूषकैः भक्षिता।
(लोहे की तराजू को चूहे खा गये थे।)

प्रश्न 5.

श्रेष्ठिनः पुत्रस्य किन्नाम आसीत्?

(सेठ के पुत्र का क्या नाम था?)

उत्तर :

श्रेष्ठिनः पुत्रस्य नाम धनदेवः आसीत्।

(सेठ के पुत्र का नाम धनदेव था।)

प्रश्न 6.

वणिक्शिशुः स्नानार्थं केन सह प्रस्थितः?

(बनिये का पुत्र स्नान करने के लिए किसके साथ गया?)

उत्तर :

वणिक्शिशुः अभ्यागतेन जीर्णधनेन सह स्नानार्थं प्रस्थितः।

(बनिये का पुत्र अतिथि जीर्णधन के साथ स्नान करने गया।)

प्रश्न 7.

जीर्णधनः श्रेष्ठिनः शिशुं कुत्र प्रक्षिप्य सत्वरं गृहमागतः?

(जीर्णधन सेठ के पुत्र को कहाँ फेंककर शीघ्र ही घर आ गया?)

उत्तर :

जीर्णधनः श्रेष्ठिनः शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य सत्वरं गृहमागतः।

(जीर्णधन सेठ के पुत्र को पर्वत की गुफा में फेंककर शीघ्र ही घर आ गया।)

प्रश्न 8.

जीर्णधनानुसारेण वणिक्शिशुः केन अपहृतः?

(जीर्णधन के अनुसार बनिये के पुत्र का किसने अपहरण कर लिया?)

उत्तर :

जीर्णधनानुसारेण वणिक्शिशुः नदीतटात् श्येनेन अपहृतः।

(जीर्णधन के अनुसार बनिये के पुत्र का नदी-तट से बाज द्वारा अपहरण कर लिया गया।)

प्रश्न 9.

विवदमानौ तौ द्वावपि कुत्र गतौ?

(विवाद करते हुए वे दोनों कहाँ गये?)

उत्तर :

तौ द्वावपि राजकुलं गतौ।

(वे दोनों राजदरबार में गये।)

प्रश्न 10.

राजकले श्रेष्ठी तारस्वरेण किं प्रोवाच?

(राजदरबार में सेठ ऊँची आवाज में क्यों बोला?)

उत्तर :

सः तारस्वरेण प्रोवाच-"अब्रह्मण्यम्! मम शिशुरनेन चौरैणापहतः।"

(वह ऊँची आवाज में बोला-"बड़ा अन्याय! मेरे पुत्र को इस चोर ने चुरा लिया।")

प्रश्न 11.

श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे किम् निवेदयामास?

(सेठ ने सभासदों के सामने क्या निवेदन किया?)

उत्तर :

श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास।

(सेठ ने सभासदों के सामने आरम्भ से सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया।)

प्रश्न 12.

धर्माधिकारिभिः तौ केन प्रकारेण सन्तोषितौ?

(धर्माधिकारियों द्वारा उन दोनों को किस प्रकार सन्तुष्ट किया गया?)

उत्तर :

धर्माधिकारिभिः तौ परस्परं संबोध्य तुला-शिशु-प्रदानेन सन्तोषितौ।

(धर्माधिकारियों ने उन दोनों को आपस में समझाकर तराजू और बालक दिलाकर सन्तुष्ट किया।)

प्रश्न 13.

वणिक्पुत्रस्य किं नाम आसीत्? (वणिक् पुत्र का क्या नाम था?)

उत्तर :

वणिक्पुत्रस्य नाम जीर्णधनः आसीत्।

(वणिक् पुत्र का नाम जीर्णधन था।)

प्रश्न 14.

जीर्णधनानुसारेण कः पुरुषाधमः?

(जीर्णधन के अनुसार अधम पुरुष कौन है?)

उत्तर :

जीर्णधनानुसारेण यस्मिन् देशेऽथवा स्थाने स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ताः तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् सः पुरुषाधमः।

(जीर्णधन के अनुसार जिस देश अथवा स्थान पर अपने पराक्रम से ऐश्वर्यों को भोगा गया, वहीं पर धनहीन होकर जो रहता है वह पुरुष अधम है।)

प्रश्न 15.

तुलां निक्षिप्य जीर्णधनः कुत्र अगच्छत्?

(तराजू को धरोहर रखकर जीर्णधन कहाँ चला गया?)

उत्तर :

तुलां निक्षिप्य जीर्णधनः देशान्तरम् अगच्छत्।

(तराजू को धरोहर रखकर जीर्णधन परदेश चला गया।)

प्रश्न 16.

कुत्र किञ्चिदपि शाश्वतं नास्ति?

(कहाँ पर कुछ भी स्थायी नहीं है?)

उत्तर :

संसारे किञ्चिदपि शाश्वतं नास्ति।

(संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है।)

प्रश्न 17.

जीर्णधनः स्नानार्थं कुत्र गच्छति?

(जीर्णधन स्नान के लिए कहाँ जाता है?)

उत्तर :

जीर्णधनः स्नानार्थं नद्यां गच्छति।

(जीर्णधन स्नान के लिए नदी पर जाता है।)

प्रश्न 18.

जीर्णधनः स्नात्वा किम् कृत्वा च गृहमागतः?

(जीर्णधन स्नान करके और क्या करके घर आ गया?)

उत्तर :

जीर्णधनः स्नात्वा वणिक्शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य च गृहमागतः।

(जीर्णधन स्नान करके और सेठ के पुत्र को पर्वत की गुफा में फेंककर घर आ गया।)

प्रश्न 19.

श्येनः कम् हर्तुं न शक्नोति?

(बाज किसका अपहरण नहीं कर सकता?)

उत्तर :

श्येनः शिशुं हर्तुं न शक्नोति।

(बाज बालक का अपहरण नहीं कर सकता।)

प्रश्न 20.

कः सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास?

(किसने सभासदों के सामने आरम्भ से सम्पूर्ण वृत्तान्त निवेदन किया?)

उत्तर :

श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास।
(सेठ ने सभासदों के सामने आरम्भ से सम्पूर्ण वृत्तान्त निवेदन किया।)

(ख) प्रश्न निर्माणम्

प्रश्न 1.

रेखाङ्कितपदान्यधिकृत्य प्रश्न-निर्माणं कुरुत

1. कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः आसीत्।
2. जीर्णधनः विभवक्षयाद् देशान्तरं गन्तुमिच्छति।
3. तस्य गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्।
4. जीर्णधनः तुलां श्रेष्ठिनो गृहे निक्षिप्य देशान्तरं प्रस्थितः।
5. ततः सः पुनः स्वपुरमागत्य श्रेष्ठिनम् उवाच।
6. त्वदीया तुला मूषकैः भक्षिता।
7. अहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि।
8. श्रेष्ठिनः पुत्रस्य नाम धनदेवः आसीत्।
9. सः वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय अभ्यागतेन सह प्रस्थितः।
10. जीर्णधनः स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिपति।
11. सः गिरिगुहायाः द्वारं बृहच्छिलया आच्छाद्य गृहमागतः।
12. पश्यती मे नदीतटात् श्येनेन अपहतः शिशुः।
13. विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ।
14. मम शिशुः अनेन चौराण्यपहतः।
15. भवता सत्यं न अभिहितम्।
16. भोः भोः! मद्वचः श्रूयताम्।
17. धर्माधिकारिणः तमूचुः-'भोः! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुतः।'
18. यत्र मूषकाः लौहतुलां खादन्ति तत्र श्येनः बालकं हरति।
19. सः श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं निवेदयामास।
20. ततस्तैः द्वावपि तौ तुला-शिशु-प्रदानेन सन्तोषितौ।

उत्तर :

प्रश्न-निर्माणम्

1. कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने किन्नाम वणिक्पुत्रः आसीत्?
2. जीर्णधनः किमर्थं देशान्तरं गन्तुमिच्छति?
3. तस्य गृहे कीदृशी तुलासी?

4. जीर्णधनः तुलां कुत्र निक्षिप्य देशान्तरं प्रस्थितः?
5. ततः सः पुनः स्वपुरमागत्य कम् उवाच?
6. त्वदीया तुला कैः भक्षिता?।
7. अहं नद्यां किमर्थं गमिष्यामि?
8. श्रेष्ठिनः पुत्रस्य नाम किम् आसीत्?
9. सः वणिक्शिशुः स्नानोपकरणमादाय केन सह प्रस्थितः?
10. जीर्णधनः स्नात्वा तं शिशुं कुत्र प्रक्षिपति?
11. सः गिरिगुहायाः द्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः?
12. पश्यतो मे नदीतटात् केन अपहृतः शिशुः?
13. विवदमानौ तौ द्वावपि कुत्र गतौ?
14. मम शिशुः केन अपहृतः?
15. भवता किम् न अभिहितम्?
16. भोः भोः! किम् श्रूयताम्?
17. धर्माधिकारिणः तम् किम् ऊचुः?
18. कुत्र श्येनः बालकं हरति?
19. सः श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे किम् निवेदयामास?
20. ततस्तैः द्वावपि तौ कथं सन्तोषितौ?

7marks

लौहतुला गद्यांशों के सप्रसंग हिन्दी सरलार्थ एवं भावार्थ

1. आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः। स च विभवक्षयात् देशान्तरं गन्तुमिच्छन् व्यचिन्तयत् यत्र देशोऽथवा स्थाने भोगा भुक्ताः स्ववीर्यतः। तस्मिन् विभवहीनो यो वसेत् स पुरुषाधमः ॥ तस्य च गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुला आसीत्। तां च कस्यचित् श्रेष्ठिनो गृहे निक्षेपभूतां कृत्वा देशान्तरं प्रस्थितः। ततः सूचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरम् आगत्य तं श्रेष्ठिनम् अवदत्-"भोः श्रेष्ठिन्! दीयतां मे सा निक्षेपतुला।" सोऽवदत्-"भोः! नास्ति सा, त्वदीया तुला मूषकैः भक्षिता" इति।

जीर्णधनः अवदत्-"भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैः भक्षिता। ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति। परमहं नद्यां स्नानार्थं गमिष्यामि। तत् त्वम् आत्मीयं एनं शिशुं धनदेवनामानं मया सह स्नानोपकरणहस्तं प्रेषय" इति। स श्रेष्ठी स्वपुत्रम् अवदत्-"वत्स! पितृव्योऽयं तव, स्नानार्थं यास्यति, तद् अनेन साकं गच्छ" इति। अथासौ श्रेष्ठिपुत्रः धनदेवः स्नानोपकरणमादाय प्रहृष्टमनाः तेन अभ्यागतेन सह प्रस्थितः। तथानुष्ठिते स वणिक् स्नात्वा तं शिशुं गिरिगुहायां प्रक्षिप्य, तद्वारं बृहत् शिलया आच्छाद्य सत्त्वरं गृहमागतः।

अन्वय-यत्र देशे अथवा स्थाने स्ववीर्यतः भोगाः भुक्ताः तस्मिन् विभवहीनः यः वसेत् सः अधमः पुरुषः।

शब्दार्थ-अधिष्ठाने = स्थान पर नगर में। वणिक्पुत्रः = बनिए का पुत्र। विभवक्षयात् = धन की कमी के कारण। गन्तुमिच्छन् (गन्तुम् + इच्छन्) = जाने की इच्छा से। व्यचिन्तयत् (वि + अचिन्तयत्) = सोचने लगा। स्ववीर्यतः = अपने पराक्रम के द्वारा। विभवहीनो = धन-ऐश्वर्य से हीन। पुरुषाधमः = नीच पुरुष। लौहघटिता = लोहे से बनी हुई। पूर्वपुरुषोपार्जिता = पूर्वजों के द्वारा खरीदी गई। तुला आसीत् = तराजू थी। श्रेष्ठिनो = सेठ। निक्षेपभूतां = जमा-राशि/धरोहर के रूप में। सूचिरं कालं = बहुत समय तक। भ्रान्त्वा = घूमकर। शाश्वतम् = सदा रहने वाला। स्नानोपकरणहस्तं = नहाने का सामान हाथ में लिए हुए। प्रेषय = भेज दो। पितृव्योऽयं = चाचा, ताऊ। यास्यति = वह जाएगा। अनेन साकं = उसके साथ। प्रहृष्टमनाः = प्रसन्न मन वाला। अभ्यागतेन = अतिथि। गिरिगुहायां = पर्वत की गुफा में। बृहत् शिलया = विशाल शिला से। आच्छाद्य = ढककर। सत्त्वरं = शीघ्र। गृहमागतः (गृहम् + आगतः) = घर आ गया।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'लौहतुला' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित 'पञ्चतन्त्र' के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि सेठ के पास धरोहर के रूप में रखी गई अपनी लोहे की तुला के न मिलने पर जीर्णधन ने नदी में स्नान कराने के बहाने सेठ के पुत्र को गुफा में छुपा दिया।

सरलार्थ-किसी स्थान पर जीर्णधन नामक बनिए का पुत्र रहता था। धन की कमी के कारण विदेश जाने की इच्छा से उसने सोचा-जिस देश अथवा स्थान पर अपने पराक्रम के द्वारा भोगों का भोग किया, वहाँ धन-ऐश्वर्य से हीन होकर जो निवास करता है, वह मनुष्य सबसे नीच होता है।

भाव यह है कि जिस स्थान पर मनुष्य अपने पराक्रम से एकत्रित सम्पत्ति ऐश्वर्य से आराम करता है, वहीं यदि वह निर्धन हो जाता है तो उसे नीच पुरुष माना जाता है।

उसके घर पर उसके पूर्वजों द्वारा खरीदी गई लोहे से बनी एक तराजू थी। उसे किसी सेठ के घर धरोहर के रूप में रखकर वह दूसरे देश को चला गया। इसके बाद दीर्घकाल तक इच्छानुसार दूसरे देश में घूमकर पुनः अपने नगर को वापस आकर उसने सेठ से कहा-"हे सेठ! धरोहर के रूप में रखी मेरी वह तराजू दे दो।" उसने कहा-"अरे! वह तो नहीं है, तुम्हारी तराजू को चूहे खा गए।"

जीर्णधन ने कहा-"हे सेठ! यदि चूहे खा गए तो इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। यह संसार ही ऐसा है। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। परंतु मैं नदी पर स्नान के लिए जा रहा हूँ। इसलिए तुम अपने धनदेव नामक इस पुत्र को स्नान की वस्तुएँ हाथ में देकर मेरे साथ भेज दो।" . वह सेठ अपने पुत्र से बोला-"बेटा! ये तुम्हारे चाचा हैं, स्नान के लिए जा रहे हैं, तुम इनके साथ जाओ।"

इस प्रकार वह बनिए का पुत्र स्नान की वस्तुएँ हाथ में लेकर प्रसन्न मन से उस अतिथि के साथ चला गया। तब वह बनिया-पुत्र वहाँ पहुँचकर और स्नान करके उस शिशु को पर्वत की गुफा में रखकर द्वार को एक बड़े पत्थर से ढक कर शीघ्र घर आ गया।।

भावार्थ-संस्कृत में एक कहावत है-“शठे शाढ्यं समाचरेत्।” अर्थात् धूर्त के साथ धूर्त ही बनना चाहिए। सेठ ने जीर्णधन के साथ धूर्तता का आचरण किया। उसका जवाब देने के लिए उसने सेठ के पुत्र को पर्वत की गुफा में छुपा दिया।

2. सः श्रेष्ठी पृष्ठवान्-“भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुः यः त्वया सह नदीं गतः”? इति। स अवदत्-“तव पुत्रः नदीतटात् श्येनेन हतः” इति। श्रेष्ठी अवदत्-“मिथ्यावादिन! किं क्वचित् श्येनो बालं हर्तुं शक्नोति? तत् समर्पय मे सुतम् अन्यथा राजकुले निवेदयिष्यामि।” इति। सोऽकथयत्-“भोः सत्यवादिन्! यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति। तदर्पय मे तुलाम्, यदि दारकेण प्रयोजनम्।” इति। एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ। तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच-“भोः! वञ्चितोऽहम्! वञ्चितोऽहम्! अब्रह्मण्यम्! अनेन चौराणामप्यपहृतः” इति। अथ धर्माधिकारिणः तम् अवदन्-“भोः! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुतः”।

शब्दार्थ-पृष्ठवान् = और पूछा। कथ्यतां = बताओ। कुत्र = कहाँ। श्येनेन = बाज के द्वारा। हतः = ले जाया गया। मिथ्यावादिन = झूठ बोलने वाले। समर्पय = लौटा दो। अन्यथा = नहीं तो। विवदमानौ = झगड़ा करते हुए। तारस्वरेण = जोर से। अब्रह्मण्यम् = घोर अन्याय, अनुचित। अपहृतः = चुरा लिया गया है।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक ‘शेमुषी प्रथमो भागः’ में संकलित पाठ ‘लौहतुला’ में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित ‘पञ्चतन्त्र’ के ‘मित्रभेद’ नामक तन्त्र से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि सेठ तथा जीर्णधन दोनों आपस में झगड़ते हुए राजकुल में जाते हैं।

सरलार्थ-उस व्यापारी (सेठ) द्वारा पूछा गया-“हे अतिथि! बताइए मेरा पुत्र कहाँ है जो तुम्हारे साथ नदी पर गया था?” उसने (जीर्णधन) कहा-“नदी के तट से उसे बाज

उठाकर ले गया।" सेठ ने कहा-"हे झूठे! क्या कहीं बाज बालक को ले जा सकता है? तो मेरा पुत्र लौटा दो अन्यथा मैं राजकुल में शिकायत करूँगा।"

उसने कहा-"अरे सच बोलने वाले! जैसे बाज बालक को नहीं ले जाता, वैसे ही चूहे भी लोहे से निर्मित तराजू नहीं खाते। यदि पुत्र को वापस चाहते हो तो मेरी तराजू लौटा दो।"

इस प्रकार झगड़ते हुए वे दोनों राजकुल चले गए। वहाँ सेठ ने जोर से कहा-"अरे! अनुचित हो गया! अनुचित! मेरे पुत्र को इस चोर ने चुरा लिया है।" तब न्यायकर्ताओं ने उससे (जीर्णधन) कहा-"अरे! सेठ का पुत्र लौटा दो।" ।

भावार्थ-जिस प्रकार जीर्णधन को पता था कि तराजू सेठ के पास है, उसी प्रकार सेठ को भी पता था कि उसका पुत्र जीर्णधन के पास ही है। आपस में फैसला न होने के कारण वे न्यायाधीश के पास जाते हैं।

3. सोऽवदत्-“किं करोमि? पश्यतो मे नदीतटात् श्येनेन शिशुः अपहृतः” । इति।
तच्छ्रुत्वा ते अवदन्-भोः! भवता सत्यं नाभिहितम्-किं श्येनः शिशुं हर्तुं समर्थो भवति?
सोऽवदत्-भोः भोः! श्रूयतां मद्वचः
तुलां लौहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः।
राजन्तत्र हरेच्छ्येनो नात्र संशयः॥
ते अपृच्छन्-“कथमेतत्”।
ततः स श्रेष्ठी सभ्यानामग्रे आदितः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयत्। ततः न्यायाधिकारिणः विहस्य, तौ
द्वावपि सम्बोध्य
तुला-शिशुप्रदानेन तोषितवन्तः।

अन्वय-राजन्! यत्र लौहसहस्रस्य मूषकाः खादन्ति तत्र श्येनः बालकं हरेत्, अत्र संशयः न।

शब्दार्थ-पश्यतो मे = मेरे देखते हुए। नदीतटात् = नदी के तट से। नाभिहितम् = कहा गया है। हरेत् = चुरा सकता है। ले जा सकता है। संशयः = सन्देह। सभ्यानामग्रे = सभासदों के सम्मुख। आदितः = आरम्भ से। सर्वं वृत्तान्तं = सारी घटना। विहस्य =

हँसकर। सम्बोध्य = समझा-बुझाकर। तोषितवन्तः = सन्तुष्ट किए गए।
प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित
पाठ 'लौहतुला' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित
'पञ्चतन्त्र' के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि सेठ तथा जीर्णधन फैसले के लिए
राजकुल में गए, जहाँ पर न्यायाधीश ने फैसला सुनाया।

सरलार्थ-उसने (जीर्णधन) कहा-“क्या करूँ? मेरे देखते-देखते बालक को बाज नदी के
तट से ले गया।” यह सुनकर वे सब बोले-अरे! आपने सच नहीं कहा-क्या बाज बालक
को उठा ले जाने में समर्थ होता है? उसने (जीर्णधन) कहा-अरे-अरे! मेरी बात सुनिए

हे राजन्! जहाँ लोहे से निर्मित तराजू को चूहे खा सकते हैं, वहाँ बाज बालक को उठा
ले जा सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

उन्होंने कहा-“यह कैसे हो सकता है?”

इससे उस सेठ ने सभासदों के सामने आरम्भ से सारा वृत्तान्त कह सुनाया। तब
हँसकर उन्होंने उन दोनों को समझा-बुझाकर तराजू और बालक का आदान-प्रदान
करके उन दोनों को सन्तुष्ट किया।

भावार्थ-इस गद्यांश में न्याय के महत्त्व को बताया गया है। वादी-प्रतिवादी दोनों को
पता होता है कि दोषी कौन है, परन्तु दोष निर्धारण के लिए न्यायाधीश का फैसला
सर्वमान्य होता है। सेठ तथा जीर्णधन को न्यायाधीश द्वारा दिए गए फैसले को मानना
पड़ा।

IV. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं पुनः लिखत

(निम्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के अनुसार दोबारा लिखिए)

(अ) (क) ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति।

(ख) ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरम् आगत्य।

(ग) आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः।

(घ) श्रेष्ठिनो आह—“भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति।”

(ङ) ‘जीर्णधनो गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत् ।

उत्तराणि:

(ग) आसीत् कस्मिंश्चिद् अधिष्ठाने जीर्णधनो नाम वणिक्पुत्रः।

(ङ) जीर्णधनो गृहे लौहघटिता पूर्वपुरुषोपार्जिता तुलासीत्।

(ख) ततः सुचिरं कालं देशान्तरं यथेच्छया भ्रान्त्वा पुनः स्वपुरम् आगत्य।

(घ) श्रेष्ठिनो आह—“भोः श्रेष्ठिन्! नास्ति दोषस्ते, यदि मूषकैर्भक्षितेति।”

(क) ईदृशः एव अयं संसारः। न किञ्चिदत्र शाश्वतमस्ति।

(ब)

(क). अथ धर्माधिकारिणः तम् अवदन्—“भोः! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुतः” ।

(ख) एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ।

(ग) तेन वणिजा पृष्ट—“भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुः यः त्वया सह नदीं गतः” ?

(घ) तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच—“भोः! अब्रह्मण्यम्! अब्रह्मण्यम्! मम शिशुरनेन चौरैणापहतः” इति।

(ङ) यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति।

उत्तराणि:

(ग) तेन वणिजा पृष्ट—“भोः! अभ्यागत! कथ्यतां कुत्र मे शिशुः यः त्वया सह नदीं गतः” ?

(ङ) यथा श्येनो बालं न नयति, तथा मूषका अपि लौहघटितां तुलां न भक्षयन्ति।

(ख) एवं विवदमानौ तौ द्वावपि राजकुलं गतौ।

(घ) तत्र श्रेष्ठी तारस्वरेण प्रोवाच—“भोः! अब्रह्मण्यम्! अब्रह्मण्यम्! मम शिशुरनेन चौरैणापहतः” इति।

(क) अथ धर्माधिकारिणः तम् अवदन् – “भोः! समर्प्यतां श्रेष्ठिसुतः”।

v. अधोलिखित प्रश्नानाम् चतुषु वैकल्पिक-उत्तरेषु उचितमुत्तरं चित्वा लिखत- ।
(निम्नलिखित प्रश्नों के दिए गए चार विकल्पों में से उचित उत्तर का चयन कीजिए)

1. वणिक् पुत्रस्य नाम किम् आसीत् ?

(i) जीर्णधनः

(ii) धनदेवः

(iii) अजीर्णधनः

(iv) अधनदेव

उत्तरम्:

(i) जीर्णधनः

2. मूषकैः का भक्षिता?

(i) अन्नैः

(ii) तुला

(iii) फलानि

(iv) आम्राणि

उत्तरम्:

(ii) तुला

3. वणिक शिशुः केन सह प्रस्थितः?

(i) बालकेन

(ii) अभ्यागतेन

(iii) पितृणा

(iv) जनन

उत्तरम्:

(ii) अभ्यागतेन

4. विवदमानौ तौ कुत्र गतौ?

(i) देवालयं

(ii) न्यायालयं

(iii) राजकुलं

(iv) धर्मालय

उत्तरम्:

(iii) राजकुलं

5. जीर्णधनः गिरिगुहा द्वारं कया आच्छाद्य गृहमागतः?

(i) बृहच्छिलया

(ii) लौहतुलया

(iii) श्येनेन

(iv) वृक्षकाष्ठेन

उत्तरम्:

(i) बृहच्छिलया

6. 'द्वौ + अपि' अत्र सन्धियुक्तपदम् अस्ति

(i) द्वौऽपि

(ii) द्वयोऽपि

(iii) द्वावपि

(iv) द्वयोऽपि

उत्तरम्:

(iii) द्वावपि

7. 'तुलासीत्' इति पदस्य सन्धिविच्छेदम् अस्ति

(i) तुलां + आसीत्

(ii) तुला + ऽसीत्

(iii) तुलाः + आसीत्

(iv) तुला + आसीत्

उत्तरम्:

(iv) तुला + आसीत्

8. 'भ्रान्त्वा' इति पदे कः प्रत्ययः अस्ति?

(i) क्त्वा

(ii) तुमुन्

(iii) शत

(iv) क्तवतु

उत्तरम्:

(i) क्त्वा

9. 'शिशुः' इति पदस्य किं पर्यायपदम् ?

(i) बालिका

(ii) जनकः

(iii) बालकः

(iv) पितरः

उत्तरम्:

(iii) बालकः.

10. "पृष्ट च तेन वणिजा" इति वाक्ये अव्ययपदम् अस्ति

(i) तेन

(ii) पृष्टः

(iii) च

(iv) वणिजा

उत्तरम्:

(ii) च

6. सन्धिना सन्धिविच्छेदेन वा रिक्तस्थानानि पूरयत

(सन्धि अथवा सन्धिविच्छेद के द्वारा रिक्त स्थान पूरे कीजिए)

- (क) श्रेष्ठ्याह = + आह
 (ख) = द्वौ + अपि
 (ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष +
 (घ) = यथा + इच्छया
 (ङ) स्नानोपकरणम् = + उपकरणम्
 (च) = स्नान + अर्थम्

उत्तराणि:

- (क) श्रेष्ठ्याह = श्रेष्ठी + आह
 (ख) द्वावपि = द्वौ + अपि
 (ग) पुरुषोपार्जिता = पुरुष + उपार्जिता
 (घ) यथेच्छया = यथा + इच्छया
 (ङ) स्नानोपकरणम् = स्नान + उपकरणम्
 (च) स्नानार्थम् = स्नान + अर्थम्

7. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत

(समस्तपद अथवा विग्रह लिखिए)

विग्रहः – समस्तपदम्

- (क) स्नानस्य उपकरणम् =
 (ख), = गिरिगुहायाम्
 (ग) धर्मस्य अधिकारी =
 (घ), = विभवहीनाः

उत्तराणि:

विग्रहः – समस्तपदम्

- (क) स्नानस्य उपकरणम् – स्नानोपकरणम्
 (ख) गिरिः गुहायाम् – गिरिगुहायाम्
 (ग) धर्मस्य अधिकारी – धर्माधिकारी
 (घ) विभवेन हीनाः – विभवहीनाः

लौहतुला (लोहे की तराजू) Summary in Hindi

लौहतुला पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ संस्कृत साहित्य के सर्वप्रमुख कथाग्रन्थ 'पञ्चतन्त्र' के 'मित्रभेद' नामक तन्त्र (अध्याय) से सङ्कलित है। 'पञ्चतन्त्र' महाकवि विष्णुशर्मा द्वारा रचित एक विशाल ग्रन्थ है। 200 ई० से 600 ई० के मध्य विद्वानों के समाज में विशेष रूप से प्रसिद्ध महाकवि पण्डित विष्णुशर्मा ने राजा अमरसिंह के पुत्रों को राजनीति में पारङ्गत करने के उद्देश्य से 'पञ्चतन्त्र' नामक सुप्रसिद्ध कथाग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ पाँच भागों में विभक्त है। इन्हीं भागों को 'तन्त्र' के नाम से जाना जाता है। इन पाँच तन्त्रों के नाम क्रमशः-मित्रभेदः, मित्रसंप्राप्तिः, काकोलूकीयम्, लब्धप्रणाशः और अपरीक्षितकारकम् हैं। इन्हीं पाँचों के संग्रह को 'पञ्चतन्त्र' के नाम से जाना जाता है। इस ग्रन्थ में अत्यन्त सरल शब्दों में लघुकथाएँ दी गई हैं। उन कथाओं के माध्यम से लेखक ने नीति के गूढ़ तत्त्वों का प्रतिपादन किया है।

पाठ में वर्णित कथा के अनुसार जीर्णधन नामक व्यापारी अपने धन के समाप्त हो जाने पर पुनः धन कमाने की इच्छा से किसी देश में जाने के विषय में सोचने लगा। उसके घर में एक लोहे की तराजू थी। जीर्णधन अपनी उस लोहे की तराजू को किसी सेठ के घर में 'धरोहर' के रूप में रखकर विदेश चला गया। विदेश से लौटकर वह अपनी धरोहर (तराजू) को सेठ से माँगता है। सेठ ने कहा कि "तराजू चूहे खा गए"। ऐसा सुनकर जीर्णधन उसके पुत्र को स्नान के बहाने नदी तट पर ले जाकर गुफा में छिपा देता है। जब सेठ अपने पुत्र के विषय में जीर्णधन से पूछता है तो वह कहता है कि पुत्र को बाज उठाकर ले गया है। जीर्णधन के जवाब को सुनकर सेठ कहता है कि बाज बच्चे का हरण नहीं कर सकता। अतः मेरे पुत्र को मुझे दे दो। इस प्रकार विवाद करते हुए दोनों न्यायालय पहुँचते हैं जहाँ धर्माधिकारी उन्हें समुचित न्याय प्रदान करते हैं।